श्री

तुंग – महातम्य

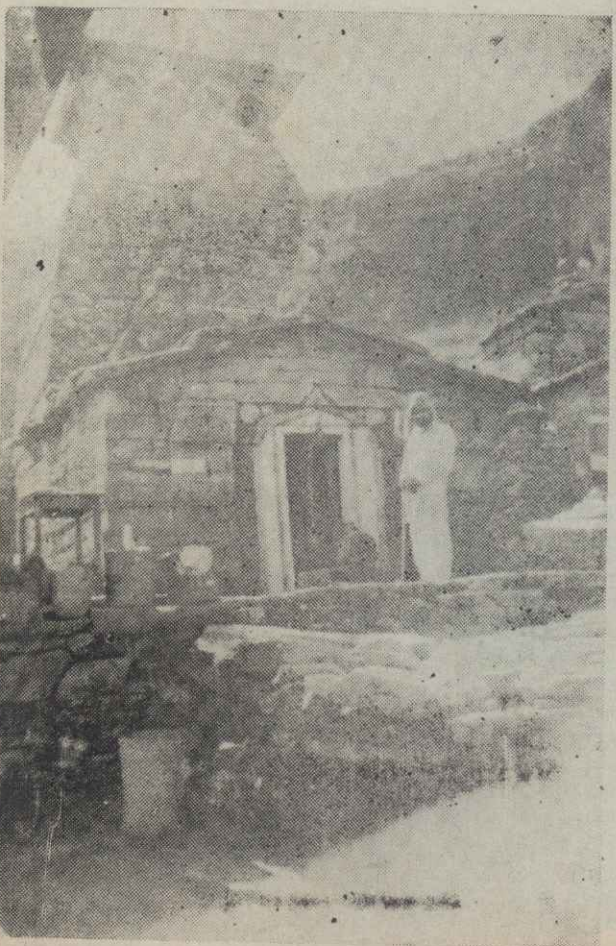

तुंग – महातम्य

लेखिका

श्रीमती उषा शास्त्री
ग्राम मक्कूमठ (चमोली)

सहयोगी

एस. एस नेगी
(एम. ए. बी एड.)
ग्राम मक्कूमठ (चमोली)

प्रकाशन श्रावण पूर्णिमा सन् १९९३ सम्वत् २०५०

प्रकाशक
हिमालयन डिपो रुद्रप्रयाग, गुप्तकाशी (चमोली)

मुल्य ५ रुपये

भूमिका

प्रिय पाठकगण – तीर्थ व्रत इष्ट पूजनादि उपासनाओं के द्वारा कल्मस नाष, भगवत सानिध्य का लाभ तथा आध्यात्मिक उन्नति अवश्य ही होती है। जिस प्रकार व्रत में इष्टध्यानादि द्वारा श्री भगवान के साथ अन्तः करण का तदात्म्य भाव प्राप्ति होती है। उसी प्रकार तीर्थ यात्रा कर भगवत विभूति तथा भगवद्तारादि के अलौकिक गुण हृदयगत होकर मनुष्य हृदय को शिव भाव में अवश्य ही भावित कर देते हैं।

लेखिका

श्रीमती उषा नेगी

अयोध्या मथुरा माया
काशी कान्ची अवन्तिका ।
वैशाली द्वारिकाध्येया
पुरी तक्षशिला गया ।।

श्री : जयतु

तुंग-महातम्य

केदारखण्ड महाकाव्य से प्रतीत होता है कि उत्तराखण्ड अनेकानेक ऋषिमुनियों की तपस्थली रही है, इन्ही स्थानों पर महामुनियों ने अपने तप योग से परम सिद्धियां प्राप्त की है और अलखनिरंजन शिवशंकर भगवान ने प्रसन्न होकर अपने भक्तों को अभय वरदान दिये हैं। उसके साथ ही महामनिशि आदि शंकराचार्य ने अपने तप बल से द्रोपदी सहित पांच पांडवों के स्वर्गारोहन के कारण पंचकेदार की स्थापना इसी उत्तराखण्ड भूमि में की है पंच केदार की यात्रा से मनुष्य स्वर्ग का भोग करता है। मनुष्य योनि में प्रविष्ट नही होता यह वर्णन भी केदारखण्ड में वर्णित है।

श्री तुंगेश्वर मार्ग दर्शन :-

भारतवर्ष या विदेशों से आने वाले टूरिस्ट हो या ईश्वर भक्त यात्री जन, उन्हें सबसे पहले हरिद्वार में आना पड़ता है, क्योंकि ईश्वर का मुख्य द्वार तथा पवित्रता का प्रथम प्रवेश द्वार यही है। हरिद्वार से ४० कीलोमीटर आगे पहाड़ों की ओर ऋषिकेश और देहरादून है वे स्थान भी दर्शनीय एवंमहत्वपूर्ण हैं यहाँ तक रेलगाड़ी मोटर व रोड़ बेज प्रत्येक समय उपलब्ध होती है देहरादून तक तो वायु सेवा भी उपलब्ध है। हरिद्वार ऋषिकेश से ही श्री केदारनाथ के लिए गौरोकुण्ड स्थान तक तथा उखोमठ तक सभी प्रकार की यातायात सेवायें उपलब्ध हैं लेकिन एक आवश्यक बात है लोग भूख-हड़ताल आज तक केवल आदमियों के कार्य को कहते थे, परन्तु गौरीकुण्ड से श्री केदारनाथ की यात्रा करने के पश्चात एक बस चलती है जिसका नाम भूखहड़ताल रखा गया है।

यह बस प्रातः ६ बजे गौरीकुण्ड से चलती है। स्थान कुण्ड से ऊखीमठ की ओर मुड़कर ऊखीमठ होते हुए चोपता नामक बस स्टेण्ड पर जाती है चोपता से श्री तुंगेश्वर की दूरी केवल ३.५ कि.मो दूरी है जो बड़ा सुगम तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रतीक है इस रास्ते को चलते ही स्वार्गिक आनन्द की अनुभूति होती है। फिर यही बस चोपता स्टेशन से आगे घोत्तीधार मण्डल होते हुए गोपे-श्वर से चमोली स्टेशन से मुड़कर जोशीमठ और फिर सांय-

काल को श्री बद्रीनाथ धाम पहुंचती है । पौराणिक गाथाओं के आधार पर श्री केदारनाथ के दर्शन के पश्चात श्री बद्रीश भगवान के दर्शन करना ही शुभ माना गया है।

दसरे दिन बद्रीनाथ से यही भूखहड़ताल बस चमोली गोपेश्वर मण्डल धोतीधार होते हुये चोपता पहुचती है यात्रियों की सुविधा को देखते हुए जनपद मुख्यालय गोपेश्वर से एक बस १२ बजे दोपहर को मण्डल होते हुए चोपता आती है और ऊखीमठ से सांयकालीन विश्राम हेतु गुप्तकाशी जाती है पुनः दूसरे दिन प्रातः ६ बजे गुप्तकाशी से चोपता होते हुए गोपेश्वर पहुचती है रास्ते में यात्रियों की सुविधा हेतु प्रत्येक स्टेशन पर आवास व्यवस्था खान-पान आदि की व्यवस्था उचित मात्रा में सुलभ है।

ऊखीमठ, दोगल बिट्टा, चोपता जंगलचट्टी, गोपेश्वर व चमोली में राजकीय निवास टूरिस्ट उपलब्ध है। श्री तुँगश्वर भगवान के मन्दिर के पास ही चार-पाँच दुकाने हैं जिसमें खान -पान रहन सहन एवं पूजा आदि की सामग्री प्रत्येक समय उपलब्ध रहती है किसी प्रकार की कमी तुँगेश्वर मन्दिर पहुचने पर नहीं मिलती हैं।

श्री तुँगेश्वर भगवान की व्यवस्था :—

श्री तुँगेश्वर भगवान को मर्तियां व सामग्री तथा

आय व्यय की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री केदारनाथ, श्री बद्री-नाथ मन्दिर समिति के द्वारा होती है। श्री तुँगेश्वर भगवान की पूजा दक्षिण के पुजारी नहीं करते बल्कि पैत्रिक हक्क —हकूब के आधार पर मक्कूमठ स्थान के निवासी मैठाणी पंडित ही किया करते हैं। तूंगनाथ जी छः मास गर्मियों में तुँगनाथस्थान पर तथा छः मास मक्कूमठ स्थान रहते है यहीं पर श्री भगवान की पूजा अर्चना होती है। मक्कूमठ भी दर्शनीय स्थान है। प्रत्येक दिन रुद्रप्रयाग से मक्कूमठ एक बस जाती हैं, यहाँ पर रहन-सहन की अच्छी व्यवस्था है यात्री बारह माह यहां आ जा सकते हैं। यात्रियों को ठहरने के लिए धर्मशाला का उचित प्रबन्ध है।

श्री तुँगेश्वर मन्दिर के दर्शन का दृष्य :—

श्री तुँगेश्वर जी का नामकरण ऊंची चोटी पर निवास होने के कारण पड़ा है तुँगेश्वर मन्दिर के अन्दर मूलरुप से शिव शंकर भगवान का लिंग है यह स्थान पाँच केदारों में से एक है।

इस लिंग के पीछे वेदव्यास, शंकराचार्य एवं भैरव जी हैं और लिंग के आगे पंच केदारों की चांदी की मूर्ति हैं अग्रभाग में छोटी मूर्ति सोने की भोग मूर्ति है भीतर के दरवाजे पर द्वारपाल खड़े हैं, बाहरी तरफ ५ पाँडव मय कुन्ती द्रोपदी हैं। सामने पर नन्दीगण गणेश जी अनु-

सूया सहस्त्रलिंग महादेव बायी तरफ पार्वती मन्दिर और पित्रादियों के पांच मन्दिर बड़ी विशाल यशोदा आदि हैं।

मन्दिर के आगे बायी ओर चलकर धर्मशिला डुंगरो देवी करुड़िया भूतनाथ मन्दिर पीछे रुद्रनाथ जी का छोटा मन्दिर और वन देवता मन्दिर है। मन्दिर की निचली तरफ स्फटिकलिंग ऊपर को तरफ संहस्त्र धारा पास में कुवेर मन्दिर निचली तरफ भूतनाथ और ढेड मील ऊपर चन्द्रशिला है, जिस स्थान की समुद्र तल से ऊंचाई १३५० मीटर है।

चन्द्रशिला स्थान से दूरबीन द्वारा दूरस्थ ऊंचे स्थान तो दिखाई देते है, साथ ही चाँदनी रात में बर्फ से ढके पर्वत श्रेणियां अति निकट एवं स्वार्गिक आनन्द की प्राप्ति करवाते हैं।

यहाँ से तीन गंगाए पैदा होती हैं। पहली गंगा का नाम आकाश यामनो हैं. जो अमृत कुण्ड होती हुई गोमुख और हस्तिमुख दो धाराओं से गिरकर जगतारिणी पाप नाशिनी ग्वालिया वगड़ होते हुए काकड़ागाड में मन्दाकिनी गंगा में मिल गई। दुसरी लिंग बोधनो भुलकना चट्टी होकर त्रिशूला होती हुई नन्दप्रयाग से दो मील नीचे

अलकनन्दा में उस पार आ मिली है तीसरी भौंस के जंगल होकर मण्डल चट्टी होती हुई वालखला चमोली से डेढ़ मील नीचे अलकनन्दा में आ मिली है।

तुँगेश्वर मन्दिर के नीचे एक ऊंचा टीला है जिसका नाम रावण शिला है कहते हैं कि लंका के राजा रावण ने यही पर तपस्या की थी। वर्तमान देव देखणी से आगे सीधे मन्दिर से नीचे और पीछे की ओर गढ़वाल विश्व-विद्यालय द्वारा जड़ी बूटी उत्पादन और शोध कार्य हेतुएक सुन्दर उपवन का निर्माण किया गया है जहाँ पर पवनऊर्जा का निर्माण होता है। प्रत्येक प्रकार की जड़ी बूटियों का संरक्षण एवं उत्पादन किया गया है जो दवाइयों हेतु अति उपयोगी हैं।

तुँग - महात्म्यः- पार्वती जी ने महादेव जी से पूछा महाराज पुण्य का सबसे बड़ा तीर्थ कौन है, महादेव जी बोले — अब हम तूंगेश्वर महाक्षेत्र का वर्णन करते हैं। उसे सुनो, उसके श्रवण करने से प्राणी निसन्देह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। शिव की भक्ति प्रदान करने वाले अन्य जितने क्षेत्र यहाँ हैं हे पार्वती देवी अब संक्षेप से उनका वर्णन सुनों।

मानधाता के क्षेत्र के दक्षिण की ओर दो योजन

चौड़ा और दो योजन लम्बा सम्पूर्ण कामनाओं का पूर्ण करने वाला श्रीं तुंगनाथ नाम वाला एक श्रेष्ठ तीर्थ है। यह तीर्थ सम्पूर्ण पापों का नाशक तथा अखिल मनोरथ को पूर्ण करने वाला है उनके दर्शन करके समस्त पापों से मुक्त होकर मनुष्य कल्याण को प्राप्त होता हैं।

सम्पूर्ण कामनाओं और अर्थों की सिद्धि के लिए प्रथम भैरव को नमस्कार कर हे देवेश्वरी। पुण्यात्माओं से व्याप्त हमारे क्षेत्र में प्रवेश करें। तुंगनाथ नाम वाले हमारे लिंग की पूजा करके मारे उस महात्मा को त्रिलोक में कुछ भी दुर नही रहता वहां ब्रह्मा आदि देवता अंजली बांध देवादि देव महात्मा महादेव की स्तुति करते रहते हैं हे प्रिय देवी जो मनुष्य हमारे लिंग पर जल मात्र भी प्रदान करता है वह व्यक्ति जितने जल बिन्दु होते हैं उतने सहस्त्र वर्षो तक शिवलोक में विराजमान रहता है और जो व्यक्ति बिल्व मन्त्र द्वारा शिव की अचना करता है हें माहेश्वरी वह पुरुष कल्प पयन्त शिवलोक में निवास करता है और जितने अक्षत मेरे लिंग के ऊपर जो व्यक्ति चढ़ाता है उतने सहस्त्र वर्ष प्रयन्त वह हमारे लोक में स्थित रहता है और हमारे ऊपर जितने पुष्प कोई चढ़ाता है उतने सहस्त्र वर्ष पर्यन्त वह पुरुष स्वर्ग लोक में निवास करता है और [जो] व्यक्ति [धूप दीप देता है वह नरक यातना को कभी नही देखता है और जो व्यक्ति

भक्तिभाव से नैवेद्य अर्पण करता है उसे सहस्रों जन्म प्रयत्न निन्दित अन्न प्राप्त नही होता है जो भक्ति में तत्पर होकर हमारी प्रदक्षिणा करता है वह पुरुष सहस्रों जन्म प्रयत्न दरिन्द्री नही होता , हे भामिनी इस प्रकार प्रत्येक कोपूजा का फल हमने तुम्हारे समक्ष वर्णित किया है।

हे सौभाग्यवती महेश्वरी — विधिवत तुंगेश्वर की पूजा करने वाला करोड़ कल्प प्रयत्न हमारे शिव लोक में निवास करता है और जो मनुष्य भक्ति पूर्वक तुंगेश्वर क्षेत्र में प्राण त्याग करता है जब तक उसकी अस्तियाँ विद्यमान रहती हैं उतने ही सहस्र युग तक वह शिवलोक में ऐश्वर्य का उपभोग करता है।

इस क्षेत्र का महात्म्य वर्णन करने की किसको शक्ति है इस क्षेत्र के महात्म्य से तो पापी भी पुण्य के भागी बने किसी नीच ब्राह्मण को भी उक्त भक्ति का लाभ हुआ था सम्पूर्ण पृथ्वी लोक में इस क्षत्र के बराबर को- तीर्थ स्थान नहीं है , पावनी गी बानी उस द्विज को किस प्रकार उत्तम गति का लाभ हुआ और हे प्रभु उसने अगम्यागमन का पाप किस प्रकार किया। फिर इस महाक्षेत्र मे उसका सम्पर्क किस प्रकार हुआ हे महादेव जी यह सब वृतान्त संक्षेप रीति से वर्णित कीजिए। महादेव जी बोले सुनो पार्वती : पहले जो वृतान्त हो चुका है उसको मैं

तुम्हारे समक्ष वर्णित करता हूं। एक ब्राह्मण वेदान्त परगामि धर्मदत्त नाम से विख्यात था उसके पुत्र का कर्म शर्मा नाम था। उसके पिता ने अत्याधिक उपाय किये पर उसको विद्या न पढ़ा सके, किन्तु वह मन्दमति बचपन से ही अति दुराचारी था धूतकर्म में निरत और अभक्ष्य भक्षण करता था। वह दुराचारी नित्यप्रति धूर्तों के संग में रहकर समयानुसार युवा हो गया।

वह ब्राह्मण सम्पूर्ण शुभ कर्मो से दूर रहता हुआ कुकर्म व सुकर्म को कुछ भी नहीं जानता था पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रतिमा स्वरुप उसकी बहिन सुकेशी लाल ओष्ठ वाली कुशोदरी थी, जिसके नेत्रों ने खंजनपक्षी को चंचलता को भी जीत लिया था। ऐसी कुलटाओं की संगति पाकर वह वैश्या हो गई और समयानुसार दुखी धर्मदत्त की मृत्यु को प्राप्त हुआ। तदन्तर पिता के धन को कर्मशर्मा ने कुकर्मों में व्यय किया। शस्त्रों के द्वारा अपना निर्वाह कर सेवकों का सेवक बन भाइयों से त्यागा हुआ परदेश चला गया, और भाग्यवसात उसकी बहन भी वैश्याओं के साथ वैश्य बन कर विदेश चली गयी हे महादेवा : देशान्तरों में जाकर कुकर्म कर उस दुष्टा को धर्म अधर्म का कुछ भी ज्ञान न रहा और व्यभिचार में प्रसिद्ध होकर मुख्य वैश्या समझी जाने लगी, देवयोग से कुछ समय पश्चात कर्मशर्मा भी उसी नगर में आकर उस वैश्या के साथ रमण करने लगा। अज्ञानता वस चिरकाल तक रमण करने के पश्चात वे पशु प्रवृति के समान

कर्म करने लगे। हे माहेश्वरी समय पाकर अर्द्ध रात्रि के समय निर्जन वन में व्याध ने उसको मार डाला।

हे देवी उसी समय फाँसी और खड्ग धारण कर भालों में व्यक्तियों को लटकाये हुए यमदूत वहां आकर उपस्थित हो गये। इतने में एक काक भूख के मारे इसके माँस लेने की कामना से मन में प्रसन्न हो वहाँ आया। हे गिरिजा कुमारी यह काक एक हड्डी के टुकड़े को चोंच में लेकर देवयोग से कैलाश धाम तुंगक्षत्र में चला गया उस वायस ने मांस को खाकर अस्ति को वहीं त्याग दिया हमारे इस पुण्य क्षत्र में उसके अस्ति के गिरने से उसका समस्त पातक तत्काल नाश हो गया। तब उस निस्पाप को लेने के लिए मेरे दूत नन्दि भृगि आदि हमारे पार्षद कर्ता है। उनको पकड़ कर यमराज के दूत लिये जाते थ। इन्होंने जाय यमदूतों से उसे मुक्त करा लिया। और वे इस महात्मा को साथ लिए कैलास धाम में उपस्थित हुए और बहुत से सहस्रों वर्ष पर्यन्त उसने मेरे निकट निवास किया। और समय पाकर वह धर्माचारी राजा हुआ. हे देवी : तुंग क्षेत्र का ऐसा महातम्य हमने तुम्हारे सामने वर्णन किया है। जहां केवल अस्ति मात्र पड़ने से पापी को परमगति का लाभ हुआ।

जो मनुष्य तुंग क्षेत्र का एक बार भी दर्शन करते हैं फिर उसका मृत्यु चाहे जिस स्थान में हो परन्तु उन्हें अवश्य सद्गति की प्राप्ति होती है। महादेव जी बोले अब संक्षेप रीति से आकाश गंगा का महातम्य वर्णन करते हैं

और तत्रत्य तीर्थों का भी महातम्य ठीक-ठीक वर्णन किया जाता है हे देवी उसे श्रवण करो। हे प्रिय देवी जो मनुष्य आकाश गंगा के तीर पर पितरों के निमित्त तर्पण करता है उसके दस पहले और दस अगले इसी प्रकार माता के वश के पितर प्रलयकाल पर्यन्त शिवलोक में सुखपूर्वक निवास करते हैं। आकाश गंगा तीर्थ में जो पुरूष पितरों के निमित्त पिण्डदान करता है।

हे सुन्दरी उस पुत्र के पैदा होने से पितृगण कृत्य कृत्य हो जाते हैं। जो पुरुष इस क्षेत्र में कणिक मात्र भी सुवर्णदान करने ब्राह्मण को देता है उस मनुष्य को दस बार सुवर्णदान करने का फल प्राप्त होता है। हे प्रिये जो पुरुष इस क्षेत्र मे कपिला गौ का दान करता हैं त्रिलोक में उसके अहोभाग्य हैं। उस गौ के अंग में जितने रोम है उतने ही कल्प पर्यन्त वह स्वर्ग लोक मे निवास करता है और वैवस्वतको तुष्टि के निमित्त ब्राह्मण भोजन कराने से समस्त पितृ देव संतोष को प्राप्त होता है क्योंकि यह महात्मा ब्राह्मण सर्वत्र विचरते है अतएव अविशय पुज्यनीय माने गये हैं।

विद्वान हो चाहे अविद्वान हो परन्तु उसे सनातन विष्णु स्वरुप जानना चाहिए। ब्राह्मण जगम तीर्थ है इस लिए सत् पुरुषों में तीर्थ रुप माने जाते हैं। और उनके वाक्य रूपी जल से पानी मनुष्य शुद्ध हो जाता है, वेदवेन्ता ब्राह्मण जिन वाक्यों को बोलते हैं उन वाक्यों का देवता मान करते हैं क्योंकि वेद बेन्ता ब्राह्मणों मे सब देवताओं

का वास है अतएव उनका वचन व्यर्थ नही जाता ब्राह्मण जिसके उपवास व्रत तीर्थ स्नान जप और तप को कर देते हैं। उनके उपवास आदि का पूर्ण फल कराने वाले को मिलता है।

हे सुन्दरी आकाश गंगा के जल का एक बूंद भी शरीर पर पड़ने से मनुष्य कृत कृत हो जाता है। हे पार्वती स्नान करने से तो कहना ही क्या है। जो पुरुष तीन दिन पर्यन्त उपवास धारण कर सर्वोच्च उन्नत शिखर के ऊपर निवास करता है। और वहां पाण परित्याग करता है। वह निसंदेह शिव रुप होता है शिवजी के दाहिनी ओर परमोत्तम एक स्फटिक लिंग है उस के दक्षिणो ओर गरुड़ नाम तीर्थ है भक्ति पूर्वक वहाँ स्नान करने से मनुष्य बैकुण्ड को प्राप्त होता है हे प्रिये उसी तीर्थ के पश्चिमो ओर पावकोस की दूरी पर कमलों द्वारा सुशोभित मानसर नामा एक सरोवर है उसी के उत्तर में हमारी शिव मूर्ति मार्कटश्वर नामा से प्रसिद्ध है।

उनके दर्शन मात्र करने से ही अथवा गन्द पुष्पादि पूजन करने से मनुष्य को शिवलोक की प्राप्ति होती है। तदन्तर दक्षिण को ओर शुभ मुकंडाश्रम में भक्तजनों की प्रीति बढ़ाने वाली माहेश्वरी नाम की देवी उपस्थित है। मनोनिग्रह पूर्वक मौन धारण कर वहाँ तीन दिन निवास करे तो चतुर्थ दिन को शान्ति में उसे कौतुक दृष्टिगत होते हैं।

हे सुमुखि : वह मनुष्य जिस बस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता है निः संदेह उसे वही बस्तु प्राप्त हो जाती है। हे निष्पापे ! इस प्रकार उत्तम तीर्थों का वर्णन हमने तुम्हारे प्रति कहा है, और संक्षिप्त रूप से त्र्यं क्षेत्र का महातम्य को पढ़ता है और सुनता है हे पार्वती उसे समस्त तीर्थयात्रा करने का फल प्राप्त होगा।

॥ इति त्र्यंगक्षेत्र महातम्यम् ॥

"तपः परं कृतयुगे त्रेतायं ज्ञानमुच्यते ।
द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेव कलौयुगे ,,

सतयुग में तप श्रेष्ठ है त्रेतायुग में ज्ञान श्रेष्ठ है द्वापर में यज्ञ को ही श्रेष्ठ कहते हैं और कलयुग में दान ही श्रेष्ठ कहलाता है ।

प्रयाग प्रिंटिंग प्रेस रुद्रप्रयाग (चमोली)